अनाहत नाद :

एक हाथ की ताली

'साधो, सब्द साधना कीजै।'

साधुओं को संबोधन कर रहे हैं।

तीन शब्द—साधक, साधु, संत।

साधक का अर्थ है : जिसने अभी-अभी चलना शुरू किया, जो अभी बाराखड़ी सीख रहा है; अभी तुतलाता है; गिर-गिर जाता है; भटक-भटक जाता है। दो कदम ठीक चलता है, तो एक कदम गलत पड़ जाता है। जिससे अभी बड़ी भूल-चूक होती है। जो अभी लौट-लौट संसार में उतर जाता है।

पुकार तो आ गई है परमात्मा की, लेकिन अभी साहस नहीं जुटा पाता। एक दिन प्रार्थना करता है, एक दिन भूल जाता है। दो दिन सद्गुरु के सत्संग में बैठता है, तीसरे दिन झपकी खाने लगता है। दो-चार दिन बड़ी उमंग से चलता है, फिर थक जाता है। और कहता है : क्या धरा है! और फिर अपनी पुरानी आदतों में उलझ जाता है।

साधक : कुछ-कुछ किरण उतरनी शुरू हुई है। लेकिन अभी किरण इतनी सघन नहीं कि जीवन को पूरा बदल दे। हां, बदलाहट के छींटे आने लगे हैं; बूंदाबांदी होने लगी।

साधु का अर्थ है : थिर हो गया; अब भटकता नहीं; अब भूल-चूक नहीं होती। अब साधना अविच्छिन्न हो गई; अखंड हो गई। अब बूंदाबांदी ही नहीं है, मेघमल्हार कर रहे हैं। और खूब वर्षा हो रही है। झड़ी लगी है; भींग रहा है। आनंदमगन हो रहा है।

लेकिन अभी भी यात्रा के मध्य में है। वहां नहीं पहुंच गया है, जहां पहुंच कर फिर और कहीं पहुंचने को नहीं बचता। अभी चल रहा है। अभी खोज जारी है। खोज व्यवस्थित हो गई है। साधक जैसी नहीं रही। तारतम्य बैठ गया। अनुशासन आ गया। दिशा मिल गई। राह साफ हो गई। कहां जाना है, कैसे जाना है—सब स्पष्ट हो गया। और दूर दिखाई पड़ता हुआ मंजिल का चमकता तारा भी साफ है। अब भटकने का कोई उपाय नहीं। लेकिन अभी पहुंचना है। वह जो गौरी-शंकर का हिमाच्छादित शिखर सुबह के सूरज में

सोने जैसा चमकता दिखाई पड़ रहा है, यद्यपि पास मालूम होता है, पर दूर है; अभी यात्रा करनी है—साधु। और जो गौरीशंकर पर विराजमान हो गया, वह संत या सिद्ध। ये तीन शब्द। 'साधु' मध्य में है। साधक—साधु—संत।

ये वचन साधु के लिए उच्चारित हैं। तो 'साधु' का अर्थ ठीक-ठीक खयाल में ले लें।

साधु का शाब्दिक अर्थ होता है : सरल, सीधा, सादगीपूर्ण, विनम्र, विनीत, निष्कपट, श्रद्धापूरित; श्रद्धा से भरा हुआ अर्थात् साधु। बुद्धि के जाल, तर्क के फैलाव, कपट और चालबाजियां, कूटनीति और राजनीतियां—सब छोड़ दी। बच्चे की भांति जो हो रहा। गुरु का हाथ ऐसे पकड़ ले, जैसे छोटा बच्चा अपने पिता का हाथ पकड़ लेता है, तब साधु।

साधक को समझाना पड़ता है : भूल मत करो। साधक को समझाना पड़ता है बार-बार—कि भूल से बचो। साधक को समझाना पड़ता है कि ठीक कैसे करो। साधक को बताना पड़ता है : गलत से कैसे बचो; और साधक को बताना पड़ता है : ठीक कैसे करो।

साधक को लाना पड़ता है बार-बार...। क्योंकि वह भटक-भटक जाता है। और साधु को...। कहीं भटकता नहीं है, लेकिन ठीक मार्ग पर—और कैसे गति बढ़े, जिस दिशा में चल पड़ा है, उस दिशा में और कैसे त्वरा आए, तीव्रता आए, धीमा-धीमापन न रहे, कुनकुनापन न रहे, सौ डिग्री पर पानी उबले, ताकि एक दिन संतत्व की घटना घटे—सिद्धावस्था घटे।

'साधो, सब्द साधना कीजै।'

साधक से तो कहना होता है : सत्संग करो। साधु से कहना होता है : अपने भीतर जाओ। सत्संग अब पर्याप्त नहीं है। सत्संग ने काम कर दिया; तुम रम गए। तुम्हें राम में प्यार जग गया, प्रीति लग गई; अब अपने भीतर जाओ; अंतर्यात्रा पर लगो।

झेन फकीर कहते हैं : खोजो उस स्थान को जहां एक हाथ की ताली बजती है। जब उसको खोज लोगे, तो तुमने जाना कि शब्द क्या है। एक हाथ की ताली अनाहत-इसी अनाहत नाद को शब्द कहते हैं। यह तुम्हारे किये नहीं होता

में है। बाइबिल कहती है : सबसे पहले शब्द था—'इन द बिगनिंग वाज़ वर्ड'—फिर उसी शब्द से सब निर्मित हुआ। उसी शब्द का सब निर्माण है।

'शब्द' से यहां अर्थ होता है : तुम्हारे उच्चारित शब्द नहीं; मनुष्य उच्चारित शब्द नहीं, ओठों से जो शब्द बनते हैं, वे नहीं। लेकिन तुम जहां शांत होते हो और तब जो अनाहत सुना जाता है।

जब तुम बिलकुल शांत हो जाओगे, तुम अपने भीतर एक संगीत सुनोगे, जिसके तुम जन्मदाता नहीं हो; जिसको तुम बजा नहीं रहे हो। इसलिए अनाहत कहते हैं उसे।

आहत का अर्थ होता है : बजाया हुआ। तुमने वीणा के तार छेड़े, तो आहत नाद पैदा होता है। तुम्हारे दो ओंठ आपस में लड़खड़ाए, तो आहत नाद पैदा होता है। तुम्हारे कंठ में खलबली मची, कंठ के यंत्र ने कुछ उच्चार किया, तो आहत नाद पैदा होता है।

जैसे हम दो हाथों को टकरा दें, तो ताली बजती है। एक हाथ से ताली तो नहीं बजती, दो हाथ से ताली बजती है। यह आहत नाद।

इसलिए झेन फकीर कहते हैं : खोजो उस स्थान को जहां एक हाथ की ताली बजती है। जब उसको खोज लोगे, तो तुमने जाना कि शब्द क्या है। एक हाथ की ताली अनाहत—इसी अनाहत नाद को शब्द कहते हैं। यह तुम्हारे किये नहीं होता। तुम जब होते ही नहीं, तब होता है। तुम जब बिलकुल शांत हो जाते हो, तब अचानक तुम्हारी चेतना में एक नाद उठता है। तुम सिर्फ साक्षी होते हो; तुम उसके कर्ता नहीं होते।

तो एक तो शब्द है, जो मनुष्य बोलता है—मनुष्य उच्चारित शब्द। और एक शब्द है—जिससे मनुष्य उच्चारित होता है, जिसमें से मनुष्य आता है; उस मूल शब्द को हम कहें—मूल ध्वनि—ओरिजिनल साउंड।

भौतिकी, फिजिक्स भी इस बात पर थोड़ी दूर तक राजी है। अगर तुम भौतिकशास्त्र पढ़ो, तो भौतिकी को जानने वाले कहते हैं : सारा जगत विद्युत

से बना है। और सारे संतों ने सदा से कहा कि सारा जगत ध्वनि से बना है।

ऊपर से ये दोनों बातें विपरीत दिखाई पड़ती हैं, लेकिन थोड़ा और गहरे जाओगे, तो विपरीतता कम हो जाएगी और समन्वय साफ होगा।

फिर पूछो भौतिकशास्त्री से : ध्वनि कैसे बनी? तो वह कहता है : ध्वनि भी विद्युत का एक रूपांतरण है। ध्वनि भी विद्युत ऊर्जा की एक तरंग है।

और सारे संतों ने कहा है : जगत ध्वनि से बना है। उनसे अगर पूछो कि विद्युत क्या है, तो वे कहते हैं कि ध्वनि का ही तीव्र आघात है।

तुमने यह कहानी सुनी होगी कि तानसेन जैसे संगीतज्ञ दीपक राग गा सकते हैं, तो बुझा हुआ दिया जल जाता है। यह इसी तरफ संकेत है। यह संबंध इस बात पर है कि अगर ध्वनि का संघात तीव्रता से किया जाए, तो अग्नि पैदा हो जाती है, विद्युत पैदा हो जाती है।

तब तुम्हें बात समझ में आ जाएगी कि भौतिकशास्त्री उसी बात को अपने ढंग से कह रहा है, जिस बात को संतों ने और किसी ढंग से कहा था।

संत कहते थे : ध्वनि सारी चीजों का मूल है। और भौतिकशास्त्र कहता है : विद्युत सारी चीजों का मूल है। लेकिन दोनों इस बात पर राजी हैं कि विद्युत और ध्वनि एक-दूसरे की तरंगें हैं। यह सिर्फ देखने की बात है। कोई गिलास को आधा भरा देखे; कोई गिलास को आधा खाली देखे। मगर यह एक ही गिलास है। आधा खाली कहो, तो वही है। आधा भरा कहो, तो वही है।

ध्वनि और विद्युत एक ही घटना के दो नाम हैं। मगर ये दोनों ने अलग-अलग शब्द क्यों कहें? क्योंकि दोनों की खोज की दिशा अलग-अलग है।

वैज्ञानिक ने खोजा है—आंख के माध्यम से; और संतों ने जाना है—कान के माध्यम से। क्योंकि आंख तो बाहर जाती है सिर्फ। आंख भीतर नहीं जाती। कान की बड़ी खूबी है। कान बाहर भी जाता है और भीतर भी जाता है।

आंख तो बाहर देखती है। आंख बंद कर लो, तो भी बाहर देखती है। चित्र दिखाई पड़ते हैं; सपने दिखाई पड़ते हैं—तरंगें...। लेकिन वे सब बाहर की ही छायाएं हैं। जब कुछ भी दिखाई पड़ने को न रह जाए, तो आंख का काम बंद हो जाता है; आंख शांत हो जाती है।

रात तुम जब सोते हो...। किसी को कभी सोते हुए देखना, तो तुम बड़े चकित होओगे कि नींद में उस आदमी की आंखों में बड़े फर्क होते रहते हैं। कभी-कभी आंख बड़ी तेज, पलक के भीतर ही चलने लगती है। तुम बाहर से भी देख सकते हो कि आंख भीतर से बड़ी गति से चल रही है। और कभी-कभी आंख ठहर जाती है; गति बंद हो जाती है।

वैज्ञानिक ने खोज की तो पाया कि जब आदमी की सोये में आंख चलती मालूम पड़ती हो, तो वह सपने देखता है। तो आंख वैसे ही चलने लगती है, जैसे वास्तविक चीजों को देखते वक्त चलती है। क्योंकि देखना शुरू हो गया, आदमी सपना देख रहा है या सोया हुआ है या नहीं—अब तुम बाहर से बैठकर कह सकते हो। सिर्फ बाहर से देख सकते हो : उसकी आंख, पलकों के भीतर पुतली चल रही है? सरक रही है, हिल रही है, इधर-उधर जा रही है, तो वह सपना देख रहा है। जब पुतली ठहर गई; जरा भी नहीं हिलती, तो सपना समाप्त हो गया। आंख का काम बंद हो गया।

कान लेकिन अद्‍भुत है। बाहर की सब ध्वनियां बंद हो जाएं, तुम बाहर से कान को बिलकुल बंद कर लो, तो भी तुम पाओगे कि भीतर नई ध्वनियां का आविर्भाव हो रहा है, जो तुमने कभी सुनी न थी। थी तो सदा, लेकिन तुम बाहर बहुत उलझे थे।

संतों ने सत्य को जाना है—कान के माध्यम से। वैज्ञानिकों ने सत्य को जाना है—आंख के माध्यम से। इसमें यह भी खयाल में रख लेना, लाओत्सु को मानने वाले फकीरों का चीन में कहना है कि आंख है पुरुष की प्रतीक और कान है स्त्री का प्रतीक। कान ग्राहक; आंख आक्रमक है। इसलिए तो हमारे पास इस तरह के शब्द हैं, जैसे : लुच्चा। लुच्चा का मतलब होता है—किसी पर आंख से हमला।

लुच्चा शब्द आता है—लोचन से। लोचन याने आंख। लुच्चा हम उस आदमी को कहते हैं, जो किसी को घूर-घूरकर देखे। जो किसी पर आंख से हमला करे, उसको लुच्चा कहते हैं। और लुच्चा का ही एक रूप आलोचक भी है। आलोचक का मतलब भी वही होता है—जो घूर-घूरकर देखे, आलोचना करे। वह भी लोचन से ही आता है—आलोचक।

आंख पुरुषवाची है, आक्रमक है, हिंसात्मक है। इसलिए तुमने देखा; बहुत से राजनीतिज्ञ काला चश्मा आंख पर लगाये रखते हैं। वह छिपाने की सब से बड़ी तरकीब है। राजगोपालाचारी या इस तरह के लोग। अगर तुम्हारी आंख दूसरे को दिखाई न पड़े, तो तुम्हारी मन्शा क्या है, इसका पता नहीं चलता। तुम्हारे इरादे क्या हैं—पता नहीं चलता।

कूटनीतिज्ञ अपनी आंख को छिपा लेते हैं, क्योंकि आंख से सब बातें जाहिर हो जाती हैं। कहते कुछ हो, और आंख कुछ और कहती है! बोलते कुछ हो; कहते हो : आपको देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। लेकिन अगर आंख में गौर करो तो पता चलता है कि जरा प्रसन्नता नहीं हुई। आंख में लहर ही नहीं प्रसन्नता की। तो कहीं आंख से बात पकड़ में न आ जाए; आंख को ढांके रखते हैं।

आंख आक्रमक है और खबर देती है। कान से कोई खबर नहीं मिलती। तुम कान के पास जाकर कितना ही देखो, कुछ खबर नहीं पा सकते। इसलिए कान को कोई राजनीतिज्ञ ढांकता नहीं। ढांकने की कोई जरूरत नहीं। उससे कुछ पढ़ा ही नहीं जा सकता। कान ग्राहक है; वह लेता है।

कान स्त्री जैसा है। आंख पुरुष जैसी है। कान ने कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया। और कान ने कभी किसी को चोट नहीं पहुंचाई। तुमने कभी सुना कि कान ने किसी पर हमला किया हो! आंख रोज-रोज करती है।

आंख के संबंध में नियम है कि किसी व्यक्ति को एक सीमा से बाहर मत

देखना। रास्ते पर तुम जा रहे हो, तो एक सेकंड, दो सेकंड के लिए तुम किसी को भी देखो, कोई अड़चन नहीं है।

वैज्ञानिक कहते हैं—तीन सेकंड आखिरी सीमा है। तीन सेकंड से ज्यादा देखा कि तुम दूसरे व्यक्ति के जीवन में हस्तक्षेप कर रहे हो। उतने दूर तक सभ्यता है इसलिए स्त्रियों ने आंख झुकाने की कला सीख ली थी। वह लज्जा का लक्षण हो गया था। आंख में आक्रमण हो सकता है, इसलिए स्त्रियां आंख झुकाने लगी थीं। न होगी आंख उठी, न किसी पर आक्रमण होगा। इसलिए तुम जब अपराध से भरे होते हो, तो आंख झुका लेते हो। वह तुम्हारी दीनता की खबर देती है।

अकड़ा हुआ आदमी आंख नहीं झुकाता; अकड़कर देखता है; घूरकर देखता है। वह उसके अहंकार की, दर्प की घोषणा है।

विज्ञान की सारी खोज आंख के माध्यम से हुई, इसलिए विज्ञान आक्रमक है और हिंसक है। इसलिए विज्ञान का अंतिम परिणाम युद्ध है।

धर्म की सारी खोज कान से हुई—अनाहत नाद को सुनना...। 'साधो, सब्द साधना कीजे।'

परमात्मा को देखना कम है, परमात्मा को सुनना ज्यादा है। परमात्मा को पाने का ढंग वही होगा, जो संगीत को गुनने का होता है; जो संगीत में डूबने का होता है।

मेरे पास आकर बहुत लोग कहते हैं कि 'आपके आश्रम में बहुत संगीत, नृत्य...। लेकिन ऐसा हम किसी और आश्रम में नहीं देखते!' उनको 'शब्द' का कुछ पता नहीं, जो ऐसा पूछते हैं।

तो जिन आश्रमों में संगीत नहीं है, नृत्य नहीं है, उन आश्रमों में शब्द की साधना नहीं हो रही। उन आश्रमों में लोग उदास बैठे हैं, उत्सव नहीं हो रहा।

परमात्मा से बहुत दूर है आंख। कान बहुत करीब है।

शब्द की साधना का अर्थ होता है : तुम निःशब्द हो जाओ। तुम्हारे चित्त की तरंगें शून्य हो जाएं। एक ऐसी घड़ी आ जाए, जहां तुम तो हो, लेकिन एक भी शब्द भीतर नहीं।

और हम हैं कि कूड़ा-कचरा भरते रहते हैं। अखबार ही पढ़ते रहते हैं लोग! सुबह से शाम तक अखबार पढ़ते रहते हैं!

जाओ-जाओ, मुझे नींद आई है, सोने दो मुझे
दिन गुजरता जाता है लफ्जों का तआकुब करते
और जब रात को थक हारके गिर पड़ता हूं
तुम चले आते हो अखबार लिए
तुम को अब याद नहीं।
कल के अखबार में भी थीं यही सारी खबरें
बल्कि परसों से यही खबरें धड़ाधड़
हर इक अखबार में छपती हैं पढ़ी जाती हैं
कल की खबरें भी लगे हाथ सुना डालो अभी!
फिर कहीं जाके मरो तुम भी, मुझे सोने दो
सुबह को फिर मुझे लफ्जों के तआकुब में निकलना होगा।

सुबह से शाम तक आदमी शब्दों के पीछे ही भागता है। कोई सम्मान के पीछे भाग रहा है। क्या मिलेगा? कुछ शब्द मिलेंगे। और क्या मिलेगा? प्रशस्तियां मिलेगी।

कोई आदमी गाली से उद्विग्न हो गया है; मरने-मारने को उतारू है! क्या हुआ है? कुछ शब्द खटक गए हैं। तुम्हारी जिंदगी गाली और प्रशंसा के बीच ही तो डोलती है। तुम्हारे जीवन का पेंडुलम गाली और प्रसंशा के बीच ही डोलता है। गाली न मिले और प्रसंशा मिले; प्रसंशा जो मिल गई है, वह जमी रहे, उखड़ न जाए। गाली जो मिल गई, वह उखाड़ी जाए, फेंकी जाए, खंडित की जाए।

जाओ-जाओ, मुझे नींद आई है, सोने दो मुझे
दिन गुजरता जाता है लफ्जों का तआकुब करते

शब्दों का पीछा करते करते ही तो दिन बीत जाता है! अब रात भी आ गई।

और जब रात को थक हारके गिर पड़ता हूं
तुम चले आते हो अखबार लिए
तुम को अब याद नहीं
कल के अखबार में भी थीं यही सारी खबरें

और तुम रोज-रोज अखबार में पढ़ते क्या हो? वही-वही—वही है। सोया आदमी नया काम कुछ करता ही नहीं। वही लड़ाई, वहीं झगड़ा, वही राजनीति, वही उठा-पटक, वही एक दूसरे के प्रति हिंसा, प्रतिहिंसा प्रतिशोध।

आदमी कुछ और करता ही नहीं। नई खबर तुमने कभी पढ़ी? अखबार में कभी कुछ मौलिक मिला? कभी तुमने सोचा कि अगर अखबार न पढ़ते, तो कुछ चूक जाता?

भले और बेहतर थे लोग, जो सुबह उठकर कुरान पढ़ते थे, गीता पढ़ते थे, बाईबिल पढ़ते थे। कुछ नया था, कुछ मौलिक था। अब तो हालत यह है कि जो आदमी अखबार पढ़ता है, वह गीता पढ़ने वाले से कहता है कि क्या वही गीता रोज पढ़े जाते हो? अब बात उलटी है। अखबार आदमी जो पढ़ रहा है, वह रोज वही का वही है। गीता रोज वही की वही नहीं है। क्योंकि गीता में इतने अर्थ—अर्थो पर अर्थ, गहराइयों पर गहराइयां हैं, ऊंचाइयां है। तुम जैसे-जैसे बदलते जाओगे वैसे-वैसे गीता में नए अर्थ प्रगट होते चले जाएंगे।

गीता अखबार नहीं है। गीता खबर नहीं है—बाहर के संसार की। गीता तो अनंत की तरफ इशारा है। तुम्हारी जैसे-जैसे आंखें उठती जाएंगी, वैसे-वैसे तुम पाओगे : और प्रगट होने लगा, और प्रगट होने लगा।

भले थे वे लोग, जो गीता, कुरान या बाइबिल पढ़ लेते थे। या धम्मपद पढ़ते थे, या लाओत्सु की किताब पढ़ते थे। क्योंकि वहां एक-एक शब्द में बड़ी गहराइयां थीं। जितनी डुबकी तुम मारते, जितनी हिम्मत करते, उतने मोती ले आते। तुम पर निर्भर था। और ऐसा कुछ नहीं था कि शब्द चूकता

था। कल भी पढ़ते, परसों भी पढ़ते, इसलिए पाठ का जन्म हुआ था।

पाठ का मतलब यह नहीं होता कि वही-वही किताब रोज पढ़ रहे हैं। वही किताब है, लेकिन नई चेतना से पढ़ रहे हैं, तो नए अर्थ दे जाती है। लेकिन अखबार तुम किसी भी चेतना से पढ़ो—कोई अर्थ नहीं हो सकता। अखबार में अर्थ ही नहीं है। अखबार व्यर्थता है—अनर्थ है।

कल के अखबार में भी यही सारी खबरें
बल्कि परसों से यही खबरें धड़ाधड़
हर इक अखबार में छपती हैं पढ़ी जाती हैं
कल की खबरें भी लगे हाथ सुना डालो अभी।

अगर तुम थोड़ी समझ का उपयोग करो, तो तुम कल का अखबार आज तैयार कर सकते हो।

लोग अंधे हैं, लोग बुद्धिहीन हैं; रोज अखबार पढ़े जाते हैं! और रोज सुबह से प्रतीक्षा करते हैं कि अखबार अभी आया या नहीं? जैसे कि कुछ नया आने को है!

इन शब्दों की भीड़-भाड़ में तुम्हारा जो भीतर का शब्द है, वह खो गया है। ये शब्द जाएं, तो शब्द की साधना हो।

अगर शब्द ही पढ़ने हों, तो कुछ ऐसे पढ़ना, जो निःशब्द से आए हों।

राजधानियों से उठते हुए शब्द मत पढ़ना। क्योंकि राजधानियां पागल हैं। और राजधानियों में पागल बसे हैं। अगर पढ़ना ही हो, तो ऐसे शब्द पढ़ना जो उनके हृदय से उठे हों, जहां सारे शब्द खो गए थे। तो उन शब्दों से तुम्हें कुछ छाया मिलेगी, राहत मिलेगी, दिशा मिलेगी।

जिनको दिशा मिल गई है, उनके थोड़े-थोड़े शब्द भी बड़े काम के हैं। हालांकि वे भी बाधा बन सकते हैं। इसलिए पंडित मत हो जाना; साधु ही रहना। इसलिए ज्ञानी मत बन जाना; सरल चित्त बालक ही रहना। पढ़ लेना शास्त्रों को; आनंद ले लेना। उनमें बड़ा मधुर है। लेकिन वहीं अटक मत लाना। क्योंकि आखिर वे भी शब्द है। सत्य तक जाना है। और सत्य तुम्हारे भीतर पड़ा है, और कबीर कहते हैं : ध्वनि की तरह पड़ा है, संगीत की तरह पड़ा है।

— ओशो
कहै कबीर मैं पूरा पाया
तेरहवां प्रवचन
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)